रक्षा बंधन – 28 अगस्त 2026

ॐ सह नाववतु, सह नौ भुनक्तु, सह वीर्यं करवावहै,
तेजस्वि नावधीतमस्तु मा विद्विषावहै ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः।।

## गुरु और शिष्य एक दूसरे का बल संवर्धन करें

# गुरु रक्षा सूत्र

गुरु और शिष्य का सम्बन्ध संसार में सबसे दिव्यतम पावन सम्बन्ध है। गुरु और शिष्य एक दूसरे के पूरक हैं। शिष्य गुरु के समक्ष अपना भाव, विश्वास और श्रद्धा समर्पित करता है। उसी अनुरूप गुरु भी अपने शिष्य को वरदान के साथ प्रेम और विश्वास की शक्ति देते हैं।

गुरु का कार्य शिष्य को उसके जीवन में आने वाली बाधाओं से सचेत करने के साथ-साथ उन बाधाओं पर विजय प्राप्ति की शक्ति प्रदान करना है। शिष्य के पास संकल्प का भाव होता है और गुरु के पास शिष्य की रक्षा का भाव एवं दिव्य शक्ति होती है।

गुरु के निर्देशन में ही शिष्य कार्य कर अपने जीवन में पूर्ण विजय प्राप्त करता है। शिष्य-साधक के जीवन में नित्य प्रति सैकड़ों भौतिक बाधाएं आती हैं और गुरु ही इन बाधाओं के निवारण के उपाय, अपनी ज्ञान शक्ति द्वारा शिष्य को निरन्तर बताते रहते हैं। जब कोई पवित्र कार्य, यज्ञ, अनुष्ठान आदि किया जाता है तो विशेष प्रकार की क्रिया की जाती है, जिसे मौली बंधन **'रक्षा-सूत्र बन्धन'** कहा जाता है। इस क्रिया में गुरु अपने शिष्य को रक्षा सूत्र पहनाते समय वचन देते हैं –

*येन बद्धो बली राजा दानवेन्द्रो महाबलः।*
*तेनत्वां प्रतिबद्धनामि रक्षे माचल माचलः।।*

जैसे **'भगवान वामन'** राजा बलि को शिष्य के रूप में स्वीकार कर उसकी रक्षा के लिए आबद्ध हो गये उसी प्रकार शिष्य के प्रेम और श्रद्धाभाव में आबद्ध होकर मैं तुम्हारी रक्षा का वचन देता हूं।

इसी भाव को निरन्तर जाग्रत रखने हेतु प्रत्येक शिष्य को गुरु प्रदत्त एक विशेष गुरु रक्षा सूत्र धारण करना आवश्यक है। जब आपने यह **'गुरु रक्षा सूत्र'** धारण कर रखा है तो निश्चित मानिए सद्गुरुदेव सदैव आपके साथ हैं।

☆ **गुरु रक्षा सूत्र आपके हाथ में बंधा एक विशेष कवच है, जो आपको निरन्तर शक्ति प्रदान करता है। मंत्रों से अभिमंत्रित प्राण प्रतिष्ठा की विशेष क्रिया के साथ गुरु रक्षा सूत्र का निर्माण किया गया है।**

☆ **गुरु रक्षा सूत्र को गुरु ध्यान-पूजन कर पुरुष साधक दाहिने हाथ में और स्त्री साधक बांये हाथ में बांध लें। गुरु रक्षा सूत्र प्रत्येक शिष्य को अवश्य धारण करना है। स्त्रियों द्वारा इसे धारण करने से तंत्रदोष, रोग इत्यादि से रक्षा प्राप्त होती है।**

☆ **अपने परिवार में बच्चों तथा अन्य सदस्यों को भी यह दिव्यतम गुरु रक्षा सूत्र अवश्य पहना दें। इससे बालकों पर नजर दोष इत्यादि समाप्त हो जाते हैं और विद्या सिद्धि प्राप्त होती है।**

**– प्राण प्रतिष्ठा न्यौ. – 400/–**

रक्षा बंधन का दिन सामाजिक लोक मर्यादा में बहन द्वारा भाई को रक्षा सूत्र पहनाया जाता है। वैदिक काल में श्रावण पूर्णिमा को गुरु शिष्य रक्षा पर्व के रूप में सम्पन्न किया जाता था। शिष्य द्वारा गुरु को रक्षा सूत्र अर्पित किया जाता था और गुरु द्वारा शिष्य को रक्षा सूत्र प्रदान किया जाता था। वैदिक प्रार्थना 'ॐ सह नाववतु...' गुरु शिष्य एक दूसरे को आपस में रक्षा बल, संबल और सहयोग की प्रार्थना है। प्रत्येक शिष्य गुरु द्वारा संस्पर्शित रक्षा सूत्र को इस दिन स्वयं पहने और अपने परिवार के सदस्यों को पहनायें।